उत्साह और अट नहीं रही

---

1. फागुन मास में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन, 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर कीजिए (2024)

Answer. परीक्षार्थी पाठ के संदर्भ से प्रकृति-सौन्दर्य के कोई दो बिंदु लिखेंगे, जैसे -

- मंद सुवासित, शीतल हवा का बहना
- मन में उल्लास और उमंग का भरना
- पेड़ों पर नए लाल - हरे पत्ते निकलना
- वातावरण पुष्पित, पल्लवित और सुगंधित होना

* कोई एक बिंदु लिखने पर

* असंगत या निरर्थक उत्तर लिखने पर

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2016

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

'अट नहीं रही है' कविता में किस ऋतु का वर्णन है और ऐसी कौन-सी चीज है, जो नहीं अट रही है?

Answer:

'अट नहीं रही है' कविता में फागुन मास अर्थात् वसंत ऋतु की शोभा एवं मस्ती का वर्णन है। फागुन की शोभा, उसकी आभा सर्वव्यापक है। वह इतनी अधिक है कि प्रकृति और तन-मन में वह समा नहीं पा रही है। फागुन की शोभा, उसकी आभा से सृष्टि का कण-कण शोभायमान है।

Question 2.

फागुन की आभा कैसी है और 'अट नहीं रही है' कविता में उसकी स्थिति कैसी वर्णित हुई है? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

फागुन की आभा सर्वव्यापक है, जो सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है। चारों ओर का वातावरण सुगंधित है। फागुन की आभा एवं उसकी सुंदरता की व्यापकता के दर्शन पेड़, पत्ते, फूलों आदि में होते हैं। 'अट नहीं रही है' कविता में फागुन के सौंदर्य को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि चारों ओर फागुन का सौंदर्य झलकता है। सारा वातावरण पुष्पित एवं सुगंधित हो जाता है।

2015

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 3.

'उत्साह' कविता किस प्रकार की रचना है?

Answer:

'उत्साह' एक आह्वान गीत है, जिसमें कवि ने बादलों का आह्वान किया है कि वे उत्साहपूर्वक बरसकर जन-जन की व्याकुलता दूर करें। यह आह्वान दो रूपों में अभिव्यक्त हुआ है। कवि चाहता है कि एक ओर बादल गरजकर समाज में क्रांति की चेतना एवं उत्साह का संचार करें। समाज को नवजीवन प्रदान कर गतिशीलता प्रदान करें तथा दूसरे रूप में जल-वर्षा कर गर्मी से पीड़ित धरती एवं लोगों की प्यास बुझाकर उन्हें शीतलता एवं संतुष्टि प्रदान करें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 4.

कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

Answer:

कवि की आँख फागुन की सुंदरता से इसलिए नहीं हट रही है क्योंकि फागुन मास में प्रकृति का सौंदर्य अपनी चरम सीमा पर है। चारों तरफ़ हरियाली का वातावरण है। पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूलों एवं पल्लवों से लद गए हैं। शीतल, मंद, सुगंध पवन सुहावने मौसम की सृष्टि कर रही है। सर्वत्र प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह का वातावरण है। फागुन के आगमन से प्रकृति नवजीवन से भर उठी है। ऐसे में फागुन का सौंदर्य आँखों में समा नहीं रहा है।

2014

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 5.

'अट नहीं रही है' कविता में चारों ओर छाई सुंदरता देखकर कवि क्या करना चाहता है?

Answer:

'अट नहीं रही है' कविता में चारों तरफ़ छाई सुंदरता को देखकर कवि का मन अभिभूत है। फागुन माह में प्रकृति नव-पल्लव, पुष्पों से सुशोभित हो गई है। हरियाली का वातावरण अनुपम दृश्य की सृष्टि कर रहा है। कवि इस सौंदर्य से अपनी दृष्टि हटा पाने में असमर्थ है। वह इस सौंदर्य को निरंतर निहारता जा रहा है। इस सौंदर्य-दर्शन से वह तृप्त नहीं होता है।

Question 6.

'उत्साह' कविता में 'नव जीवन वाले' किस को कहा गया है और क्यों?

Answer:

'उत्साह' कविता में कवि ने 'नव जीवन वाले' बादलों के लिए प्रयुक्त किया है। क्योंकि बादल बरसकर दग्ध पृथ्वी के ताप को शांत करते हैं, प्रकृति में नव-जीवन का संचार करते हैं। बादलों की फुहार प्रकृति में प्रफुल्लता का संचार करती है। पशु, पक्षी, पेड़-पौधे, मनुष्य सभी के जीवन में आनंद एवं उत्साह का संचार होता है। जीवन हरा-भरा एवं उल्लास से परिपूर्ण बन जाता है। इसलिए बादलों को 'नव जीवन वाले' कहना सर्वथा उपयुक्त है।

2013

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 7.

कवि निराला बादल से बरसने के स्थान पर गरजने के लिए क्यों कहते हैं?

Answer:

कवि समाज में क्रांति और उत्साह की भावना का संचार करना चाहते हैं। वह समाज में परिवर्तन एवं नवजीवन लाना चाहते हैं। इसके लिए वह बादल को क्रांति का सूत्रधार मानते हैं। उसके माध्यम से जोश, उत्साह, पौरुष का संचार करना चाहते हैं। बादल के 'गरजने' से ही क्रांति का संदेश जन-जन तक पहुँचेगा। बादल का 'बरसना' उसके शांत रूप का प्रतीक है, जबकि वह बादल के गरजने के साथ क्रांति की चेतना को जागृत करना चाहते हैं। इसलिए वह बादल से बरसने के स्थान पर गरजने को कहते हैं।

2012

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

'उत्साह' कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करते हैं?

Answer:

'उत्साह' कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करते हैं–

(*i*) बादल उत्साह व क्रांति का प्रतीक है जो इस संसार में नई चेतना भर सकता है।

(*ii*) बादल को 'बाल-मन' के समान बताया है। जैसे बच्चों की कल्पनाएँ प्रतिपल मनोहर रूप लेती रहती हैं, उसी प्रकार बादलों की शोभा भी प्रतिक्षण बदलती रहती है।

(*iii*) कवि ने बादल को काले-घुंघराले बालों वाला बताया है, जिसके हृदय में बिजली छिपी है। यहाँ पर बिजली कवि के हृदय में विद्यमान ओजस्विता के भाव को प्रकट करती है जो समाज का नवनिर्माण करने में समर्थ है।

Question 9.

फ़ागुन में ऐसा क्या है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न है? 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर लिखिए।

Answer:

फागुन मास में प्रकृति का सौंदर्य अपनी चरम सीमा पर है। चारों तरफ हरियाली का वातावरण है। पेड़-पौधे, रंग-बिरंगे फूलों एवं पल्लवों से लद गए हैं। शीतल, मंद, सुगंध पवन सुहावने मौसम की सृष्टि कर रही है। सर्वत्र प्रफुल्लता, उल्लास एवं उत्साह का वातावरण है। फागुन के आगमन से प्रकृति नजवीवन से भर उठी है। उसका अनुपम सौन्दर्य ही है जो उसे अन्य ऋतुओं से भिन्न बना रहा है।

Question 10.

'उत्साह' कविता में कौन विकल और उन्मन थे और क्यों?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:
'उत्साह' कविता में विश्व के मनुष्य विकल और उन्मन थे, क्योंकि गर्मी निरंतर बढ़ रही थी और बादलों के न बरसने से लोगों में बेचैनी और व्याकुलता बढ़ती जा रही थी। भयंकर गर्मी के कारण सारी धरती जलती-सी प्रतीत हो रही थी।

Question 11.
फागुन मास की प्राकृतिक शोभा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
Answer:
फागुन मास में प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। वसंत के आगमन से सर्वत्र हरियाली छा जाती है। वृक्ष, पेड़-पौधे नव-पल्लव एवं पुष्पों से भर जाते हैं। भंवरें गुंजार करने लगते हैं। वातावरण सुगंध से भर उठता है। शीतल, मंद, सुगंध से युक्त हवा बहने लगती है। पर्यावरण प्रफुल्लित हो उठता है। सर्वत्र उल्लास एवं उत्साह का संचार होने लगता है।

2011

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 12.
कविता का शीर्षक 'उत्साह' क्यों रखा है?
Answer:
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने कविता का शीर्षक 'उत्साह' इसलिए रखा है क्योंकि यह एक आह्वान गीत है। कविता में बादल एक तरफ़ पीड़ित-प्यासे जन की आकांक्षा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ़ वही बादल नई कल्पना और नए अंकुर के लिए विध्वंस, विप्लव और क्रांति चेतना को संभव करने वाला है। आह्वान गीत उत्साह का प्रतीक है। बादल की गर्जना व क्रांति की चेतना लोगों में उत्साह का संचार करती है। कवि कविता के माध्यम से क्रांति लाने के लिए लोगों में उत्साह का संचार करना चाहता है।

Question 13.
'अट नहीं रही है' कविता में क्या संदेश दिया गया है?
Answer:
'अट नहीं रही है' कविता फागुन की मादकता को प्रकट करती है। कवि फागुन की सर्वव्यापक सुंदरता को अनेक संदर्भों में देखता है। इस कविता के द्वारा वह यह संदेश देता कि जब मन प्रसन्न हो, तो हर तरफ़ फागुन का ही सौंदर्य और उल्लास दिखाई पड़ता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 14.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–
बादल, गरजो!

(क) कवि और कविता का नाम लिखिए।
(ख) कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कह रहा है?
(ग) कवि बादल को क्या घेरने के लिए कह रहा है और क्यों?
(घ) बादलों को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है?
(ङ) कविता में प्रयुक्त किसी एक अलंकार का सोदाहरण उल्लेख कीजिए?

Answer:

(क) कवि का नाम– सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
कविता का नाम– उत्साह

(ख) कवि बादल को गरजने को इसलिए कह रहा है क्योंकि कवि समाज में क्रांति एवं उत्साह की भावना का संचार कर, नवजीवन एवं परिवर्तन लाना चाहता है।

(ग) कवि बादल को आकाश को घेरने के लिए कह रहा है, ताकि पृथ्वी पर जल की वर्षा हो सके।

(घ) बादलों को क्रांति एवं नवचेतना उत्पन्न करने वाले के रूप में प्रस्तुत किया है।

(ङ) 'बाल कल्पना के-से पाले'– उपमा अलंकार

2010

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 15.

'उत्साह' कविता में बादल किसका प्रतीक है? कवि ने बादल को बरसने के स्थान पर 'गरजने' को क्यों कहा है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'उत्साह' कविता में बादल क्रांति, चेतना और जागृति का प्रतीक हैं। कवि बादल को बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए इसलिए कहता है क्योंकि वह बादल की गर्जना द्वारा जन-सामान्य में जागृति, उत्साह और चेतना का संचार करना चाहता है। कवि बादलों के माध्यम से समाज में जिस क्रांति, नवीनता और जोश का संचार करना चाहता है, वह बादलों के बरसने से संभव नहीं है। समाज में परिवर्तन के लिए आकाश को गुंजायमान कर देने वाली बादलों की घनघोर गर्जना की आवश्यकता है तभी लोग जागृत होंगे और क्रांति के लिए तत्पर होंगे।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 16.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–
बादल, गरजो!

(क) कवि बादल से क्या प्रार्थना कर रहा है? बादल को किसके समान बताया गया है?

(ख) बादल के हृदय में 'विद्युत-छवि' क्यों है? उसको 'नवजीवन वाले' क्यों कहा गया है?

(ग) आशय स्पष्ट कीजिए–'वज्र छिपा, नूतन कविता फिर भर दो।'

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) कवि बादल को गरजने के लिए प्रार्थना कर रहा है क्योंकि कवि बादलों की गर्जना के माध्यम से समाज में क्रांति एवं उत्साह की भावना का संचार कर परिवर्तन लाना चाहता है। कवि ने बादल को बच्चों की कल्पना के समान बताया है। जिस तरह बाल-कल्पनाएँ प्रतिपल बदलती रहती हैं उसी तरह से बादल का सौंदर्य भी निरंतर परिवर्तित होता रहता है।

(ख) बादल के हृदय को 'विद्युत-छवि' इसलिए कहा है क्योंकि बादलों के भीतर बिजली के रूप में अपार क्षमता और शक्ति विद्यमान है जो विद्युत-छवि क्रांति, ओजस्विता एवं जनचेतना का प्रतीक है। कवि ने बादलों को 'नवजीवन वाले' इसलिए कहा है क्योंकि बादल की गर्जन का क्रांतिकारी रूप नई चेतना और जागृति से भर देता है। उनमें नव-जीवन और नई-दिशा प्रदान करने की क्षमता है।

(ग) 'वज्र छिपा, नूतन कविता फिर भर दो' पंक्ति के माध्यम से कवि बादलों को वज्र के समान कठोर, शक्तिशाली एवं क्रांति की चेतना उत्पन्न करने वाला मानता है। कवि बादलों के माध्यम से न केवल समाज में परिवर्तन लाना चाहता है, अपितु साहित्य के क्षेत्र में भी नवीनता एवं परिवर्तन लाना चाहता है। उसमें सामाजिक चेतना जागरूकता एवं आधुनिकता का समावेश करना चाहता है।

Question 17.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

(क) कविता में किसके सौन्दर्य का चित्रण है?
(ख) इस सौन्दर्य से कवि की आँख क्यों नहीं हट रही है?
(ग) कविता से छायावादी प्रवृत्ति की कोई पंक्ति चुनिए।
(घ) पद्यांश की भाषागत विशेषता का उल्लेख कीजिए।
(ङ) शब्दों की आवृत्ति में किस अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है?

Answer:

(क) कविता में फागुन-माह के सौंदर्य का चित्रण है।

(ख) फागुन-माह का सौंदर्य चारों दिशाओं में इस तरह से बिखर रहा है कि कहीं भी समाता हुआ प्रतीत नहीं हो रहा है। इसलिए इस सौंदर्य से कवि की आँख हट नहीं रही है।

(ग) 'पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।'

(घ) संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। भावानुकूल, सरस एवं प्रभावमयी भाषा का प्रयोग किया गया है।

(ङ) शब्दों की आवृत्ति (घर-घर, पर-पर, पाट-पाट) में पुनरुक्ति अलंकार की छटा दिखाई पड़ती है।

2009

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 18.

'उत्साह' कविता में निराला जी ने 'विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले!' कथन से क्या कहना चाहा है?

Answer:

'उत्साह' कविता में बादल उत्साह, क्रांति का प्रतीक है। कवि मानता है कि बादल के हृदय में इतनी सामर्थ्य विद्यमान है कि वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन ला सकता है और देश व समाज का नव-निर्माण कर सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 19.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन!
तप्त धरा, जल से फिर
शीतल कर दो–
बादल, गरजो!

(क) बादल कवि के किस भाव का प्रतीक है?

(ख) बादलों को 'अनंत के घन' क्यों कहा गया है?

(ग) पद्यांश की भाषा की कोई एक विशेषता बताइए।

(घ) यह कविता किस युग की रचना है?

(ङ) काव्यांश के अंत में परस्पर विलोम शब्दों के प्रयोग से कविता में क्या विशेषता आ गई है?

Answer:

(क) बादल उत्साह व क्रांति के प्रतीक हैं।

(ख) बादलों को 'अनंत के घन' इसलिए कहा है क्योंकि वे अंतहीन हैं। उनका कोई छोर नहीं। वे अनंत आकाश में छाए हुए हैं, तथा ईश्वर की अद्वितीय कृति हैं जिस पर संपूर्ण सृष्टि का जीवन निर्भर रहता है।

(ग) पद्यांश में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है। 'विकल-विकल' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार हैं। 'आए अज्ञात' में 'अ' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(घ) यह छायावाद युग की रचना है।

(ङ) 'तप्त धरा-जल से फिर शीतल कर दो– बादल, गरजो!' में परस्पर विलोम के प्रयोग से नाद सौंदर्य उत्पन्न हो गया है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 20.

निम्नलिखित काव्यांशों में से किसी एक को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

बादल, गरजो!
घेर-घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
ललित ललित, काले घुँघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो–
बादल, गरजो!

(क) काव्यांश की भाषा की विशेषता बताइए।
(ख) 'घेर-घेर घोर गगन' में कौन सा अलंकार है?
(ग) उपमा अलंकार का उदाहरण चुनकर लिखिए।
(घ) बादल किसका प्रतीक है? उसे क्या करने को कहा है?
(ङ) भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
कवि नवजीवन वाले!
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो।

Answer:

(क) भाषा सरल व प्रवाहमयी है। मुख्य स्वर ओज है। 'घेर-घेर' व 'ललित-ललित' शब्दों में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
(ख) 'घेर-घेर घोर गगन' में 'घ' वर्ण की आवृत्ति से अनुप्रास अलंकार है।
(ग) 'बाल कल्पना के-से पाले' में उपमा अलंकार है।
(घ) बादल विप्लव व क्रांति का प्रतीक है। उसे गरजने के लिए कहा गया है।
(ङ) बादल में वज्र के समान अपार शक्ति है। उसमें नवजीवन देने की सामर्थ्य है। कवि बादलों के माध्यम से कवि मानव को प्रोत्साहित कर समाज व साहित्य में परिवर्तन लाना चाहता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 21.

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल,
पाट-पाट शोभा-श्री
पट नहीं रही है।

(क) पुष्पमाला के लिए प्रयुक्त विशेषण का प्रयोग-सौंदर्य समझाइए।

(ख) रूपक अलंकार का उदाहरण चुनकर लिखिए।

(ग) प्रयुक्त भाषा की विशेषता समझाइए।

(घ) 'पाट-पाट शोभा-श्री' में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:

कहीं पड़ी है उर में
मंद-गंध-पुष्प-माल

Answer:

(क) इस काव्यांश में फागुन का मानवीकरण किया है। नवीन हरी-हरी व लाल-लाल कोमल पत्तियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे फागुन के हृदय में सुगंधित पुष्पों की माला पड़ी है। पुष्पमाला के प्रयुक्त विशेषण ने काव्य के सौंदर्य में वृद्धि की है।

(ख) 'मंद-गंध-पुष्प-माल' में रूपक अलंकार है।

(ग) तत्सम् शब्दों का प्रयोग किया है अलंकारों के प्रयोग से काव्य सौंदर्य में वृद्धि हुई है। संगीतात्मकता की अनुभूति होती है। कविता में प्रवाह है।

(घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(ङ) पेड़ की शाखाओं पर उपजी नवीन हरी व लाल पत्तियों को देखकर ऐसा लगता है जैसे फागुन के हृदय में पड़ी पुष्प-माला सुगंध बिखेर रही हो। फागुन की शोभा समा नहीं पा रही।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in